
Music

NAME- GEETANJALI

ROLL.NO.-2024150150100095

SUBJECT-MUSIC

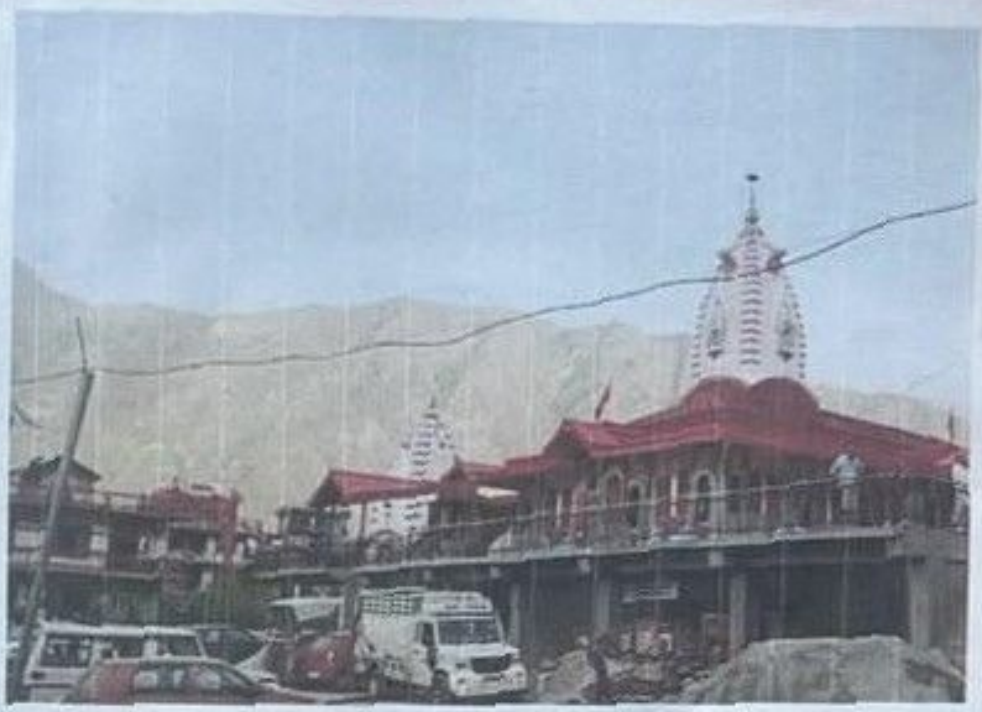
TOPIC-NAU HOOM

Principal
Govt. Degree College
Panarsa, Distt Mandi(H.P.)

03/11/2026

Music Generic

नाऊ



नाऊ हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में स्थित एक खूबसूरत गाँव है यह क्षेत्र मंडी के आँट तहसील ब्लॉक के अंतर्गत आता है यह गाँव जिला मुख्यालय से 60 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है नाऊ नामक स्थान पर माता अम्बिका माता का मंदिर है यह मंदिर स्थानीय लोगों की आस्था का एक महत्वपूर्ण केन्द्र है माता अम्बिका को इस क्षेत्र की आराध्य देवी माना जाता है इस स्थान पर हर वर्ष माता का विशेष धार्मिक आयोजन होता है, जिसे नाऊ होम तथा होम जाग के नाम से भी जाना जाता है मंदिर और मेले के कारण नाऊ - पनाऊ क्षेत्र की धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान बनी हुई है यह स्थान हिमाचल प्रदेश की पुरानी देव परंपराओं को दर्शाता है



अंबिका माँ का इतिहास :

अंबिका माता का मंदिर नाऊ में स्थित है माता का मूल स्थान निरमंड में है गाला रानी जब से निरमंड से आई इनके साथ परशुराम साथ में योगनी आए कहा जाता है कि कोई भी देवी - देवता नाऊ पनाऊ नहीं आते हैं वह केवल मंदिर तक ही आते हैं माना जाता है जब से परशु राम और योगनी जी जब से उनके साथ आई है कोई भी देवी - देवता नहीं आते हैं। अंबिका माता के मंदिर पर हर वर्ष धार्मिक आयोजन होता है, जिसे नाऊ होम कहा जाता है।

नाऊ-जाग की धार्मिक परंपराएं



अंबिका माता का खारा :

नाऊ हूम की शुरुआत में नाऊ माता अंबिका का खारा निकलता है माता का खारा रागंड में होता है तथा वहाँ पर अंबिका माता का भंडार है रागंड से माता के रथ से निकाला गया मुख को कस्तु मे रखा जाता है माता का सजा कर उस पर रखा जाता है माता रानी को हर प्रकार का शृंगार किया जाता है तथा माता रानी को रागड से लाया जाता है माता रानी को मशालो के साथ लाया जाता है



मशाले

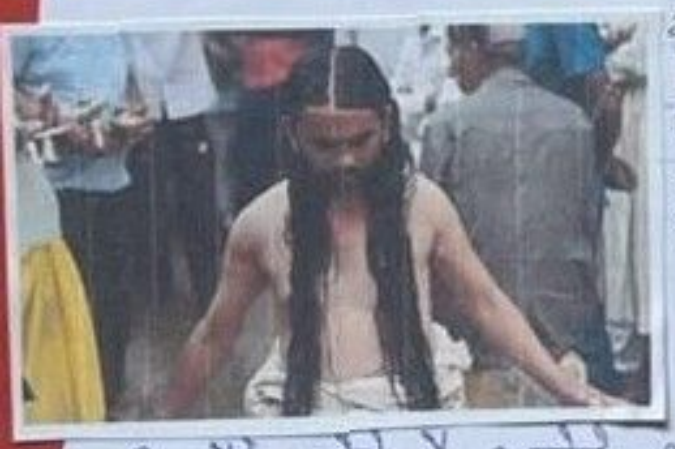
मशाले :

देवी यात्रा के दौरान लोग मशाले (लकडी मे आग) लेकर आते है यह मशाले रागंड से लाई जाती है तथा साथ में माता रानी का खारा भी आता है यह मशाले नाऊ, रागंड पनाऊ से लाए जाते है तथा जिस लोगों ने यह मशाले लाई होती है उनका पुरे दिन व्रत रखा जाता है जाता मशालो को अग्नि कुंड पर डालने के बाद खाना खाते है मशालो इस कारण भी जला जाता है कि कहा जाता है कि जो बुरी शक्तियां है दुर करने के लिए जलाया जाता है जिसके बाद सभी लोग माता के खारे को मंदिर के अंदर ले जाते है और सभी लोग मशालो को अग्नि कुंड मे डालते है



जाग :

जाग की शुरुआत माता रानी के स्वारे को मंदिर के अन्दर रखने से होती है तथा अग्नि कुंड में मशालों को रखा जाता है इसी से जाग की शुरुआत की जाती है जिसमें गुरु द्वारा अग्नि में पवित्र जल डाला जाता है जिससे सभी व्यक्ति अग्नि में मशालें डालते हैं तथा जाग का आरंभ लोकवाद्य यंत्र से भी जाग की शुरुआत की जाती है तथा गुरु द्वारा इसमें कार्यवाही की जाती है



गुर द्वार कार्यवाही :

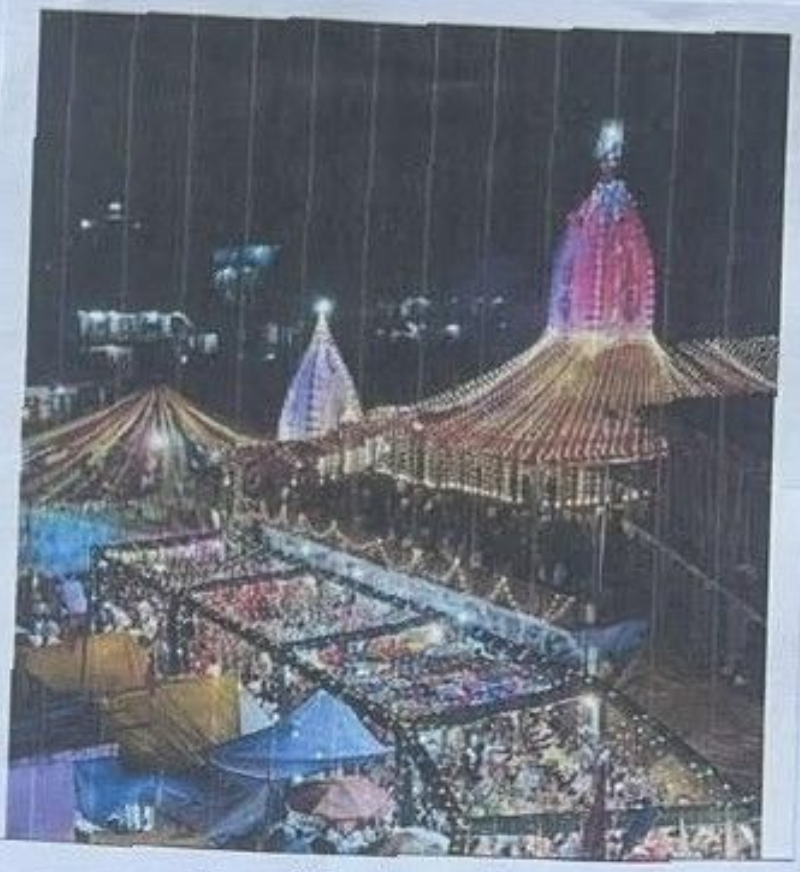
जाग की शुरुआत के बाद ही गुरु कार्यवाही की जाती है जिसमें गुर द्वारा अपने पवित्र बालों को खोला जाता है तथा उन्हें गुर के अन्दर देवता आ जाता है उसके बाद गुरु अग्नि में पवित्र जल डालते हैं और अग्नि के आस - पास कार्यवाही करते हैं उनके पास में ही पंक्ति जी बैठे होते हैं उन्होंने अपने हाथों में घंटी बजाई जाती है तथा यह कार्यवाही सुबह तीन बजे तक चलती रहती है।



देवी जागरण :

जागरण का मुख्य उद्देश्य मन की अज्ञानता को दूर करके आध्यात्मिक चेतना को जगाना है इसमें सभी लोग आते हैं जागरण की शुरुआत माता रानी की पवित्र अखंड ज्योति जलाकर होती है इसे माँ की साक्षात उपस्थिति मानी जाती है मुख्य कलाकार और भक्त सत भरे अंबिका माता के सुंदर भजन गाते हैं।

नाऊ हुम



अंबिका माता के मन्दिर पर हर वर्ष धार्मिक मेला होता जिसे जिसे नाऊ हुम कहा जाता है यह मेला माता के जन्म दिवस पर हर साल किया जाता है कहा जाता है इस दिन बुरी शक्ति खत्म हो जाती है। इस मेले में दुर दुर से माता का दर्शन करने आते है इस दिन मन्दिर को बहुत ही खुबसुरत सजाया जाता है उस दिन माता का स्वागत लोकवाद्य यंत्र से तथा मशाल द्वारा देवी के खारे को साथ में लाया जाता है और मशाल लेकर नाऊ ,पनाऊ, तथा रागड से लाते है उस दिन माता का बहुत सुन्दर श्रृंगार किया जाता है जन्माष्टमी वाले दिन माता जी को बुधा जाता है तथा कि कब आपने रथ से उतरना है अस और नाऊ हुम वाले दिन माता को फिर से निकाल रथ पर चढ़ाया जाता है

लोकवाद्य

नाऊ डुम में मुख्य : तीन प्रकार के लोक वाद्यों का प्रयोग किया गया है उसमें सुषिर लोकवाद्य, अवनद्ध लोकवाद्य तथा घन लोक वाद्य का प्रयोग किया गया है

1. सुषिर लोकवाद्य : जो फुक मारकर बजाए जाते हैं सुषिर लोकवाद्य अंतर्गत आने वाले लोक वाद्यों में करनाल, रणसिंगा तथा शहनाई का प्रयोग आदि प्रमुख है



करनाल : करनाल लोक-संस्कृति में प्रयुक्त एक महत्वपूर्ण पारंपरिक सुषिर वाद्य यंत्र है इसे सामान्यतः धातु पीतल, चाँदी से बनाया जाता है और इसमें फुँकमारकर ध्वनि उत्पन्न की जाती है, इसलिए इसे सुषिर वाद्यों की श्रेणी में रखा जाता है इसका उपयोग मुख्य रूप से देवी-देवता औं की यात्राओं, पारंपरिक धार्मिक उत्सवों, मेलों और मंदिरों की पूजा-अर्चना के दौरान किया जाता है उसी प्रकार नाऊ डुम में भी देवी के आगमन में इसका प्रयोग किया था।



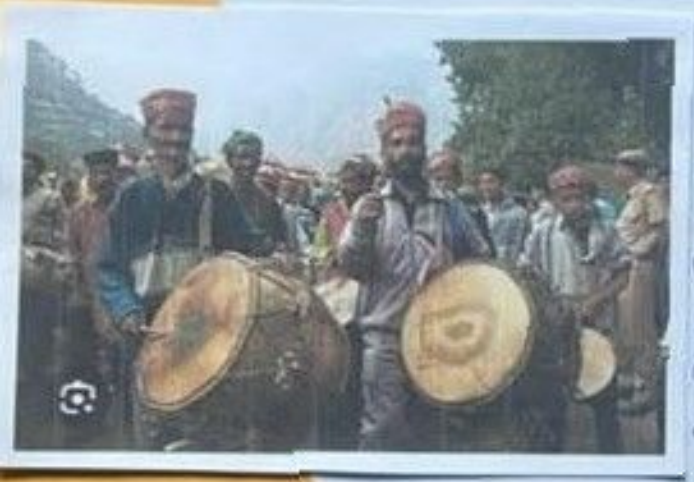
रणसिंगा : रणसिंगा लोकसंस्कृति परंपरा का एक प्रमुख लोक सुषिर वाद्य है यह वाद्य ताम्बा, चाँदी तथा अन्य मिश्रित धातुओं से बनाया जाता रणसिंगा वाद्य आकार की दृष्टि से अंग्रेजी के 'S' अक्षर के समान होता है इसे मुख से फुँक मारकर बजाया जाता है, जिससे इसकी तेज, गंभीर और प्रभाव शाली ध्वनि उत्पन्न होती है नाऊ डुम में लाऊ डुमरा जब आती है उस समय रणसिंगा को बजाकर माता आती है। लोक संस्कृति में यह केवल एक संगीत वाद्य नहीं; बल्कि देव परंपरा और सामुहिक सांस्कृतिक पहचान का महत्वपुर्ण प्रतीक भी है



शहनाई : शहनाई लोक संस्कृति परंपरा का एक प्रमुख लोक सुषिर वाद्य है इसे फूंक मारकर बजाया जाता है यह तउंरा नामक एक मजबूत लकड़ी से तैयार की जाती है इसे बजाने वाले व्यक्ति को हेरी कहा जाता है जिसे मुख्य रूप से विवाह, धार्मिक त्यौहारों, जुलूसों और मंदिरों जैसे शुभ अवसरों पर बजाया जाता है भारतीय संस्कृति में इसकी ध्वनि को अत्यंत पवित्र और 'मंगल ध्वनि' माना जाता है

2. अवनद्ध लोकवाद्य

ये चमड़े से बने होते हैं जो बीच से खोले होते हैं यह धातु के खोखले बेलनाकार शरीर पर दोनों ओर चमड़े से मढ़कर बनाया जाता है, इसे छड़ी से बनाया जाता है इसमें ढोल, नगड़ा, बम आते हैं



ढोल : ढोल लोकवाद्य में एक प्रमुख लोक अवनद्ध वाद्य है जिसे प्राचीनकाल से ही भारतीय संस्कृति में मांगलिक अवसरों, त्योहारों, लोकनृत्यों और युद्ध के समय बजाया जाता रहा है ढोल का घेरा आमतौर पर आम, शीशम, सागौन या कटहल की लकड़ी को खोखला करके बनाया जाता है इसके दोनों तरफ के खुले भागों पर बकरे या भैंस की खाल (चमड़ा) मढ़ी होती है, जिसे 'पुरी' या 'पल्ला' कहते हैं ढोल को गले या कंधे में पट्टी के सहारे लटकाकर बजाया जाता है।



नगाड़ा : नगाड़ा देव-संस्कृति में प्रयोग होने वाला एक प्रमुख अवनद्ध वाद्य है। यह मुख्य रूप से धातु या लकड़ी के अर्ध-अंकार या कड़ाही के आकार के कुंडे पर भैंस या ऊँट का चमड़ा मढ़कर बनाया जाता है इसे बजाने के लिए दो भारी और मुड़ी हुई डंडियों का उपयोग किया जाता है जिन्हें 'डंका' कहा जाता है



बाम : बाम लोक एवं देव-संस्कृति में प्रयोग होने वाला एक पारंपरिक अवनद्ध वाद्य यंत्र है जो चमड़े या झिल्ली से ढके होते हैं और जिन पर चोट या आघात करके ध्वनि उत्पन्न होती है यह विशाल आकार का नगाड़ा होता है इसका आकार बड़ा होने के कारण इसे बजाने के लिए लकड़ी के दो बड़े और मोटे डंडों का उपयोग किया जाता है देव के आगमन में इसे बजाया जाता है

3 घन वाद्य

घन वाद्य यंत्र पीतल या कांसा से बना ठोस वाद्य यंत्र, जिसका उपयोग धार्मिक आयोजनों और लोकगीत समुदाय के तेरहताली नृत्य में होता यह ऐसे ठोस वाद्य यंत्र होते हैं जिन्हें बजाने पर पूरे वाद्य के शरीर में कंपन उत्पन्न होता है इन्हें आमतौर पर आपस में टकराकर, प्रहार करके या हिलाकर बनाया जाता है



भाठा :

घन वाद्य यंत्र में भाठा देव - संस्कृति में प्रयोग होने वाला एक प्रमुख लोकवाद्य यंत्र है यह गोलाकार, चपटी आकृति का दिखाई देता है इसे लकड़ी की छड़ी से आघात करके बजाया जाता है, जिससे मधुर ध्वनि उत्पन्न होती है इसे ढोल, नगाड़ा, करनाल आदि के साथ मिलकर देव - सगारहों को विशेष सांस्कृतिक स्वर प्रदान करता है



मंजीरा :

मंजीरा लोक एवं देव संस्कृति में प्रयोग होने वाला एक महत्वपूर्ण घन वाद्य यंत्र माना जाता है यह इसको बजाया की ध्वनि निकलती है इस देवी - देवता के स्वागत पर इसको बजा कर करते हैं